Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

यशपाल कृत उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष

डॉ० डायमंड साहू
अतिथि व्याख्याता हिन्दी
शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया,
जिला – रायगढ़ (छ०ग०)

मानव जीवन संघर्षशील है। मनुष्य को जीवन में अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। उपन्यास हिंदी साहित्य की एक ऐसी विधा है जो संपूर्ण मानव जीवन का चित्रण करती है। यशपाल हिंदी साहित्य के एक महान उपन्यासकार हैं जिन्हें प्रेमचंद की उपन्यास परंपरा को आगे बढ़ाने का श्रेय जाता है। प्रेमचंद की भाँति यशपाल के उपन्यास भी यथार्थपरक हैं। यशपाल का स्वयं का जीवन संघर्षशील रहा है। यशपाल आर्य समाज से गांधीवाद, गांधीवाद से क्रांतिकारी और क्रांतिकारी से समाजवाद की ओर अग्रसर हुए। अंत में उन्हें अपने जीवन के संघर्ष का अंत समाजवादी विचारधारा में मिला और वे अंत तक समाजवादी विचारधारा को आधार बनाकर ही जीवन के संघर्षों का सामना करते रहे। प्रत्येक साहित्यकार का साहित्य उसके जीवन से अवश्य प्रभावित होता है। ''किसी भी दूसरे व्यक्ति की तरह लेखक के निर्माण में उसके बचपन के संस्कारों और परिवेश की एक विशिष्ट भूमिका होती है।''[1] इस आधार पर ही मधुरेश कहते हैं, ''अपने आरंभिक उपन्यासों में यशपाल जिन कम्युनिस्ट नायकों की सृष्टि करते हैं, वैचारिक आधार पर गहरी समरसता के बावजूद उनके आधार पर यशपाल ने अपने जीवनानुभवों और संघर्ष को नहीं समझा जा सकता। लेकिन बहुत प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध न होने पर भी वे सूत्र उनकी रचनाओं में प्रचुरता से मौजूद हैं जिन्हें जोड़कर उनके रचनात्मक व्यक्तित्व और विकास को न सिर्फ समझा जा सकता है, उसके माध्यम से उनकी रचनाओं की एक बेहतर समझ विकसित की जा सकती है।''[2]

यशपाल के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय समाज का चित्रण किया गया है। मध्यमवर्गीय समाज का जीवन बड़ा ही दुविधाग्रस्त होता है। यशपाल के उपन्यासों में शहरी समाज में दर्शन होते हैं। साहित्य में समाज के चित्रण पर डॉ० चमनलाल गुप्ता का कथन है, ''हर साहित्यकार अपने साहित्य में अपनी समाज विषयक धारणाओं को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्रकट करता है। एक तरह से समाज का चित्रण साहित्यकार की विवशता है। क्योंकि भले ही वह व्यक्तियों का चित्रण करता है परंतु वे व्यक्ति विशेष भी अपने समाज के प्रतिनिधि होते हैं।''[3]

यशपाल के उपन्यासों में दलित और शोषित समाज का चित्रण हुआ है। 'जुलैखाँ' यशपाल का अनूदित उपन्यास है। जिसमें पूंजीपति और शोषक वर्ग के संघर्ष को दिखाया गया है। इस उपन्यास का पात्र अरगाश जब शहर में घूमने जाता है तो वह देखता है कि निमांचा शहर में अभी भी कुदरतुल्ला जैसे शोषक साधारण जनता का शोषण कर रहे थे। इससे अरगाश बहुत क्रोधित हो जाता है क्योंकि उसका पिता भी इन साहूकारों का कर्ज चुकाते–चुकाते मृत्यु को प्राप्त हो गया था। वह इस जमींदारी प्रथा से घृणा करता है। वह क्रांति के मार्ग पर चलकर इनसे संघर्ष करना चाहता है और कहता है कि, ''पहले शत्रुओं को खत्म करना जरूरी है। अभी बंदूक की जरूरत है।''[4] लेकिन मार्क्सवादी याकिन उसे समझाते हुए कहता है, 'नहीं, नहीं! बंदूक का समय हो चुका। याद रखो, बंदूक निर्माण का काम नहीं कर सकती। अब हथौड़ी छैनी की जरूरत है।''[5] यशपाल समाजवादी साहित्यकार हैं अतः उनके सभी उपन्यासों में शोषक और शोषित के संघर्ष को दिखाया गया है।

यशपाल ने अपने उपन्यासों में युवावर्ग को अनेक पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं से जूझते दिखाया गया है। 'झूठा सच' भाग–1 उपन्यास का पात्र जयदेवपुरी शिक्षित होने के बावजूद भी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति से परेशान रहता है। वह बेरोजगारी की मार झेलता है तथा बहुत कम वेतन में 'पैरोकार' नामक समाचारपत्र में नौकरी करने के विवश होता है तथा उसे पुस्तक का अनुवाद कार्य करने के भी बहुत कम पैसे मिलते हैं। यशपाल ने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले युवक का वर्णन इस प्रकार किया है, ''जयदेवपुरी को एक रुपए की चीनी के लिए पौने दो घंटे तक क्यू में खड़ा होना असह्य व्यथा जान पड़ा। कहाँ

देश की स्वतंत्रता के लिए जूझ जाने का विचार और कहाँ सेर भर चीनी के लिए संघर्ष; परंतु इससे बचाव न था।''[6]

यशपाल के उपन्यासों में संघर्षशील नारी का चित्रण हुआ है। यशपाल के नारी पात्र जीवन के संघर्षों से हारकर बैठते नहीं बल्कि उनका डटकर सामना करते हैं तथा अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं। 'दिव्या' उपन्यास में दिव्या को पृथुसेन के प्रेम व धोखे के कारण समाज में अपमानित होना पड़ता है। लेकिन जब उसे समाज व धर्म प्रश्रय नहीं देता तो वह स्वतंत्र रहकर एक वेश्या का जीवन चुनती है। ''अंशु ने अपने मन का उद्‌बोधन किया–उसके जीवन में विरक्ति भी क्यों हो? देवी रत्नप्रभा और मल्लिका की भाँति कला की आराधना को भी जीवन का लक्ष्य बनाकर वह अपना जीवन उसी को अर्पण करेगी। पराश्रित और भोग्य न होकर वह आत्मनिर्भर बनेगी।''[7] भारतीय पुरुष प्रधान समाज में नारी को प्राचीनकाल से ही अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत रहना पड़ा है। 'दिव्या', 'अप्सरा का श्राप' तथा 'बारह घंटे' आदि उपन्यासों के माध्यम से नारी के इसी संघर्ष को दिखाया गया है।

'दादा कामरेड' उपन्यास में समाज के मध्यमवर्ग का वर्णन करते हुए यशपाल कहते हैं, ''मध्यम श्रेणी, अनिश्चित स्थिति के लोगों की अद्‌भुत पंचमेल खिचड़ी है। इस श्रेणी के कुछ लोग मोटरों और शानदार बंगलों का व्यवहार करते हैं और विनय से अपने–आपको इस श्रेणी का अंश बताते हैं। दूसरे लोग मजदूरों की सी असहाय स्थिति में रहकर भी केवल सफेदपोश और शिक्षित होने के बल पर इस श्रेणी का अंग होने का दावा करते हैं। देश की राजनीति और समाज सुधार की चिंता जितनी इस श्रेणी में रहती है, उतनी न तो अपने विस्तृत स्वार्थों की चिंता में व्यस्त रहने वाली ऊँची श्रेणी को और न रोटी के टुकड़े की चिंता से कभी मुक्ति न पाने वाली निम्न श्रेणी को ही है।''[8]

'दादा कामरेड' उपन्यास में शैल के माध्यम से नारी समाज के विचारों को स्पष्ट करते हुए यशपाल कहते हैं, ''देखो, तुम चाहते तो केवल शासन में क्रांति, परंतु परिवार और समाज की व्यवस्था के बंधनों में अवरुद्ध प्राण कैसे छटपटाते हैं, यह क्यों नहीं सोचते? क्या व्यक्ति को जीवन में कामना पूर्ति का अधिकार नहीं चाहिए? मैं तो सबसे अधिक इसी को अनुभव करती हूँ।''[9] नारी अपनी आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है लेकिन समाज में आज भी उसकी स्थिति यथावत बनी हुई है।

'मेरी–तेरी उसकी बात' उपन्यास में यशपाल ने पारिवारिक संघर्ष को दर्शाया है। भारतीय समाज में संपत्ति व उत्तराधिकार को लेकर परिवारों में आपसी कलह होती रहती है। सेठ रतनलाल के परिवार के माध्यम से यशपाल वर्णित करते हैं कि ''नए बँटे परिवारों में सरीकों की परस्पर ईर्ष्या, जलन और कलह कहावतों–उपमाओं के रूप में प्रसिद्ध हैं। हरपाल, किशनलाल, उनकी पत्नियाँ और बहू–बेटे, निपूते, बारह बरस से विधुर चाचा की बँटवारे की धौंस कुआर के बादल की कड़क समझ रहे थे। दस बरस बाद चाचा की आँखें मुँदने पर सब उनके ही बेटे–पोतों को सँभालना था। अप्रत्याशित जवान चाची का आ जाना उनके लिए तो निर्मेघ आकाश से वज्रपात।''[10] इसी प्रकार जब अमर सेठ की मृत्यु हो जाती है तो कुनबे वाले उसकी संपत्ति हड़प लेते हैं। उसकी पत्नी उषा मेहता को अपनी पैतृक संपत्ति वापस लेने के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटाना पड़ता है।

यशपाल ने अपने उपन्यासों के युवा पात्रों को सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए दिखाया है। अमर गौरी को निर्जला एकादशी का व्रत रखने पर कहता है, ''देखो जीजी, पूजा–पाठ, नेम–व्रत किसलिए किया जाता है? भगवान ऐसी तपस्या का फल परलोक में क्या देंगे यह तो नहीं मालूम, इस लोक में तुम्हें निरर्थक कष्ट सहने का दंड जरूर दिया।''[11] यहाँ यशपाल की मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है।

यशपाल के उपन्यासों में समाज में युवावर्ग को आर्थिक संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। शिवनाथ जब बम बनाने के अपराध में जेल चला जाता है तो पीछे से उसके परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। ''घर की अवस्था दिन–प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। आमदनी का एकमात्र उपाय, उसके घर के किराए पर दिए भाग से मिलने वाला पैसा भी अब न आता था। किराएदार पुलिस की नाराजगी की आशंका से मकान छोड़ गए थे। ऐसी अवस्था में सयानी कन्या के विवाह की चिंता माँ–बाप को खाए जा रही थी।''[12]

समाज में फैली गरीबी के कारण अनेक लोग भूखे मरते हैं। मजदूर लोग इस गरीबी का कारण पूँजीवादी व्यवस्था को मानते हैं तथा हड़ताल के माध्यम से पूँजीपतियों का विरोध करते हैं। लेकिन खाली पेट तो हड़ताल भी नहीं होती। इसी मजदूर संघर्ष का वर्णन करते हुए यशपाल कहते हैं, ''मनुष्य विचारों और इरादे से साहस बटोर सकता है, परंतु इन उपायों से पेट नहीं भर सकता। पेट का खाली रहना मनुष्य की सबसे बड़ी निर्बलता है जो उसके साहस और इरादे की ऊँची दीवार की नींव खिसका देती है। महीना–भर भूख का संकट झेलकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाले मजदूरों में हड़ताल तोड़ देने की पुकार उठने लगी।''[13] अतः पेट के लिए मनुष्य को जीवनभर संघर्ष करना पड़ता है।

बेरोजगारी समाज की एक बहुत बड़ी समस्या है। 'मेरी तेरी उसकी बात' उपन्यास में रोजगार के लिए संघर्षरत युवाओं का चित्रण करते हुए यशपाल कहते हैं, ''ओमप्रकाश ने सन् तैंतीस में बी०ए० पास किया था, थर्ड डिवीजन में। कॉलेज की पढ़ाई के अतिरिक्त मास्टर जी की ट्यूशनों में हाथ बँटाता था। आशा थी, लड़का बी०ए० पास कर नौकरी पर लग जाएगा तो पिता का बोझ हल्का होगा। ओमप्रकाश ने नौकरी के लिए कितनी दरखास्तें दीं, सिफारिशों के लिए गिड़गिड़ाया परंतु कहीं वैकेंसी नहीं।''[14] आज भी भारतीय समाज के युवा बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं।

भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही वर्ण व्यवस्था है। उच्च कुल में उत्पन्न को सम्मान दिया जाता है तथा निम्न कुल में उत्पन्न को हेय दृष्टि से देखा जाता है, चाहे वह कितना भी कुशल क्यों न हो। यशपाल ने अपने उपन्यास 'दिव्या' में इस वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है। जब दास पुत्र पृथुसेन को सरस्वती पुत्री दिव्या की पालकी में कंधा देने से हटा दिया जाता है तो वह इसका विरोध करता है, ''जन्म का अपराध? यदि वह अपराध है तो उसका मार्जन किस प्रकार संभव है? शस्त्र की शक्ति, धन की शक्ति, विधा की शक्ति कोई भी शक्ति जन्म को परिवर्तित नहीं कर सकती।''[15] अतः यहाँ निम्नवर्ग को उच्चवर्ग से समानता के अधिकार के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया है।

निष्कर्ष

यशपाल उस समय के साहित्यकार हैं जब भारत में नवजागरण का पदार्पण हो चुका था। भारतीय समाज में अनेक बुराइयाँ थीं। सामाजिक बुराइयाँ समय व परिस्थितियों के अनुसार उत्पन्न होती रहती हैं। यशपाल समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करने वाले साहित्यकार हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में समाज में फैली कुरीतियों, रूढ़ियों व अंधविश्वासों का पर्दाफाश करने के साथ–साथ उनसे निकलने के उपाय भी सुझाए हैं। यशपाल के उपन्यासों के पात्र सामाजिक संघर्षों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हुए दिखाई देते हैं। धार्मिक रूढ़ियों का तर्कपूर्ण दृष्टि से खंडन किया गया है। यशपाल के मध्यमवर्गीय युवा पात्र बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, जाति–पाति जैसी समस्याओं के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा के साहित्यकार थे; अतः इनके सभी उपन्यासों पर मार्क्सवाद का प्रभाव परिलक्षित होता है और हर जगह वर्ग संघर्ष दिखाई देता है। चाहे वह पुरुष और स्त्री में हो, पूँजीपति और मजदूर में हो, जमींदार और किसान में हो, धर्म और विज्ञान में हो। यशपाल का स्वयं का जीवन संघर्षशील रहा है। अतः इस संघर्षशीलता की छाप उनके उपन्यासों पर देखी जा सकती है।

संदर्भ

1. मधुरेश, यशपाल रचनात्मक पुनर्वास की एक कोशिश, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), प्रथम संस्करण 2006, पृ० 20
2. वही, पृ० 20
3. डॉ० चमनलाल गुप्ता, यशपाल के उपन्यास सामाजिक कथ्य, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
4. यशपाल, जुलैखाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण, पृ० 116
5. वही, पृ० 116
6. यशपाल, झूठा सच, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 2014, पृ० 14
7. यशपाल, दिव्या, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण 2014, पृ० 112
8. यशपाल, दादा कामरेड, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करणः 2020, पृ० 12
9. वही, पृ० 89
10. यशपाल, मेरी–तेरी उसकी बात, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014, पृ० 18
11. वही, पृ० 99
12. यशपाल, देशद्रोही, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014, पृ० 23
13. यशपाल, देशद्रोही, पृ० 50
14. यशपाल, मेरी–तेरी उसकी बात, पृ० 28
15. यशपाल, दिव्या, पृ० 12